विषय	हिंदी
प्रश्नपत्र सं. एवं शीर्षक	**P6: हिंदी प्रदेशों का लोक साहित्य**
इकाई सं. एवं शीर्षक	**M33: लोकजीवन के प्रहरी ईसुरी और उनका फाग-काव्य**
इकाई टैग	**HND_P6_M33**

निर्माता समूह	
प्रमुख अन्वेषक	**प्रो. गिरीश्वर मिश्र** कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 442001 ईमेल : misragirishwar@gmail.com
प्रश्नपत्र समन्वयक	**प्रो. देवराज** अधिष्ठाता, अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 442001 ईमेल : dr4devraj@gmail.com
इकाई लेखक	**प्रो. ऋषभदेव शर्मा** पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद 500004 ईमेल : rishabhadeosharma@yahoo.com
इकाई समीक्षक	**प्रो. गिरीश्वर मिश्र** कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 442001 ईमेल : misragirishwar@gmail.com
भाषा संपादक	**प्रो. देवराज** अधिष्ठाता, अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 442001 ईमेल : dr4devraj@gmail.com

पाठ का प्रारूप

1. पाठ का उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. लोक जीवन के प्रहरियों की मूल प्रकृति
4. ईसुरी का जीवन परिचय
5. फाग: एक लोक काव्यरूप
6. ईसुरी के फाग : अंतःप्रकृति
7. ईसुरी के फाग : विषयवस्तुपरक वर्गीकरण
8. निष्कर्ष

1. पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के उपरांत आप -

- लोकसाहित्य साधकों की भूमिका की व्याख्या कर सकेंगे।
- लोकजीवन के प्रहरियों की मूल प्रकृति का परिचय दे सकेंगे।
- ईसुरी के जीवन और व्यक्तित्व से परिचित हो सकेंगे।
- लोक काव्यरूप फाग को समझ सकेंगे।
- ईसुरी के फाग-काव्य का विवेचन कर सकेंगे।

2. प्रस्तावना

लोक जीवन को बचाने का कार्य लोक स्वयं ही करता है। लोक समाज लोक संस्कृति और लोक अभिव्यक्ति के विविध पहलुओं को अपने सहज विचारों, नैसर्गिक भावों और सामूहिकता की गतिविधियों द्वारा बचाए रखने के लिए सचेष्ट रहता है। इसी के साथ कुछ ऐसे व्यक्ति भी लोक में जन्म लेते हैं, जो लोक रक्षण के निमित्त सामूहिकता की विविध गतिविधियों के प्रतिनिधि बन जाते हैं। ये लोक के साथ इस प्रकार एकतान और समरस हो जाते हैं कि इनकी अभिव्यक्ति का उद्देश्य अपने को अभिव्यक्त करना नहीं रह जाता, बल्कि इनकी अभिव्यक्ति का एकमात्र लक्ष्य लोक-साधना बन जाता है। परिणामस्वरूप इनकी आत्माभिव्यक्ति लोकाभिव्यक्ति बन जाती है।

3. लोक जीवन के प्रहरियों की मूल प्रकृति

ऐसे व्यक्ति सही अर्थ में लोक जीवन के प्रहरी होते हैं और इनकी समस्त अभिव्यक्तियाँ एवं गतिविधियाँ लोक रक्षण के निमित्त होती हैं। इनके लिए लोक पहले है, आत्म उसके बाद आता है। ये ही वे लोग हैं जो लोक के समग्र जीवन को उसकी समस्त विशेषताओं, लोक कलाओं, लोकगायन और लोक परंपराओं को बचाकर रखने के लक्ष्य के लिए ही जीते हैं। इस बात को यों भी कहा जा सकता है कि लोक प्रहरी कहे गए ये लोकरचनाकार या लोककलाकार लिखित परंपरा के रचनाकारों और कलाकारों से भिन्न होते हैं। इस भिन्नता का आधार यह है कि लिखित परंपरा के साहित्यकार जहाँ लोक और उसकी सामग्री का अपने साहित्य सृजन में 'साधन' के रूप में उपयोग करते हैं, वहीं इसके विपरीत लोक जीवन के प्रहरी लोकसाहित्यकार के लिए लोक और उसकी समस्त सामग्री 'साध्य' होती हैं। लोक प्रहरी ईसुरी इसी प्रकार के व्यक्ति थे जिन्हें फाग रचने और उनका गायन करने के लिए जाना जाता है।

4. ईसुरी का जीवन परिचय

उत्तर प्रदेश में झाँसी जिले के कस्बे मऊरानीपुर में एक गाँव है मेंढ़की। इस गाँव के निवासी पं. भोलेराम अरजरिया तिवारी के घर सन 1838 ई. (संवत् 1895 वि.) में चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को ईसुरी का जन्म हुआ। इन्हें ईसुरी प्रसाद, ईश्वरी प्रसाद और हरताल ईसुरी नामों से भी जाना जाता है। ईसुरी अपने माता-पिता की अंतिम संतान होने के कारण बहुत लाड़ले थे। पढ़ने-लिखने में बचपन में उनकी कोई खास रुचि नहीं थी। उधर उनके मामा निःसंतान थे और ईसुरी को बहुत चाहते थे। इसलिए ईसुरी को प्रायः मामा के घर जाकर रहना पड़ता था। इस तरह उनका बचपन लाड़-प्यार और आनंद में ही बीता। बड़े होने पर ईसुरी को आजीविका के लिए नौकरी करनी पड़ी। नौगाँव छतरपुर के पास बगौरा नामक गाँव के जमींदार चतुर्भुज के यहाँ उन्हें कारिंदा के रूप में नियुक्ति मिल गई। उनका वेतन खाना-खुराक के साथ पाँच रुपया प्रति माह था। यहीं रहते हुए उन्होंने अनेक फागों की रचना की और बुंदेलखंड के सर्वाधिक लोकप्रिय लोक कवि के रूप में ख्याति अर्जित की। एक बार उनकी प्रशंसा सुनकर छतरपुर नरेश ने उन्हें विशेष सुविधाएँ देकर अपने यहाँ आमंत्रित किया लेकिन बगौरा के जमींदार की नौकरी छोड़कर वे राज

दरबार में नहीं गए क्योंकि वे लोक के निष्कलुष प्रेम से बंधे हुए थे। ईसुरी अपने तन-मन से पूरी तरह लोक के साथ एकमेक थे। इकहरे बदन के ईसुरी का रंग गोरा था। वे आमतौर से देहाती पोशाक कुर्ता, धोती और साफा पहनते थे। पढ़े-लिखे खास नहीं थे पर उनकी "वाणी में विचित्र आकर्षण और जोश था। इसी कारण उनके इष्ट मित्र कहा करते थे कि उनको मोहिनी मंत्र सिद्ध है। ईसुरी का निधन सन 1909 ई. (मार्गशीर्ष शुक्ल 6) को उनकी कर्मभूमि बगौरा में हुआ। कहा जाता है कि ईसुरी का बगौरा से गहरा लगाव था, इतना गहरा कि उन्होंने कामना की थी कि उनका अंतिम संस्कार बगौरा में ही किया जाए -

> यारो, इतनी जस लै लीजौ, चिता अंत ना कीजौ।
> चलत सिरम कौ बहत पसीना, भसम कौ अंतस भींजौ।
> निगतन खुदै चेटका लातन, उन लातन मन रीजौ।
> बे सुसती ना होंय रात-दिन, जिनके ऊपर सीजौ।
> गंगा जू लौं मरें 'ईसुरी', दाग बगौरा दीजौ।

5. फाग : एक लोक काव्यरूप

फाग वास्तव में एक लोक काव्य रूप है जिसकी परंपरा फागु-काव्यों के रूप में हिंदी साहित्य के आदिकाल से प्राप्त होती है। ईसुरी ने अपनी फाग रचनाओं में 28 मात्राओं वाले नरेंद्र छंद का प्रयोग किया है जिसमें 16-12 पर यति का निर्वाह मिलता है। एक फाग में 4, 5 या 6 पंक्तियाँ प्राप्त होती हैं। फाग के एक छंद की सभी पंक्तियों में सम चरण के अंत में तुक का निर्वाह होता है और प्रायः गुरु या दो लघु मात्राएँ होती हैं। विषम चरण के अंत में लघु, गुरु की कोई बाध्यता नहीं है। फिर भी प्रायः ईसुरी ने अपने सभी फाग छंदों में सभी पंक्तियों में तुक का निर्वाह किया है। सामान्य रूप से फाग होली के अवसर पर गाया जाने वाला एक लोक काव्यरूप है। इसकी अंतर्वस्तु के रूप में मुख्यतः होली उत्सव, प्रकृति सौंदर्य और राधा-कृष्ण का प्रेम स्वीकृत है। परंतु यह कोई अनिवार्य शर्त नहीं है। फाग का गायन शास्त्रीय और उप-शास्त्रीय संगीत के रूप में किया जाता है। बुंदेलखंड में फाग गायन प्रमुखता से प्रचलित है। डॉ. रामभजन सिंह (लोकरंग, बुंदेलखंडी गायन, 2010, पृ. 49) ने फागों के 6 (छह) प्रकार बताए हैं -

1. जंगलापर फाग
2. छंददार फाग
3. अधर फाग (इसमें गायन के समय होंठ नहीं मिलते हैं।)
4. पधर फाग
5. सधर फाग
6. दहकवा फाग (इसको फाग के अंत में गाया जाता है तथा इसको दुगनी आवाज से गाते हैं।)

इस प्रकार स्पष्ट है कि फाग-काव्य लोकरचना परंपरा और लोकगायन परंपरा द्वारा लोकतत्व का संरक्षण करने वाला काव्यरूप है। यह लोक जीवन के विविध पक्षों और भावनाओं को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। फाग काव्य में लोक परिवेश, लोक जीवन, लोक सौंदर्य और लोक अनुभूति के विविध रूपों की कुंठाहीन अभिव्यक्ति पाई जाती है।

6. ईसुरी के फाग : अंतःप्रकृति

फाग कवि ईसुरी ने अनेक फागों की रचना की जो गेय परंपरा के कारण लोक कंठ में सुरक्षित हैं। ईसुरी की ये रचनाएँ उनके निधन के लगभग बीस वर्ष बाद संकलित की गईं। 1931 से 1941 की अवधि में कुंवर दुर्ग सिंह ने इन रचनाओं को पहले पहल संकलित किया। ईसुरी के गाँव के लोगों से सुनकर इलाशंकर गुहा ने भी उनके फाग संकलित किए हैं। इसी प्रकार गौरीशंकर द्विवेदी ने भी ईसुरी के फागों का संकलन तैयार किया है। इन फागों की विशेषता यह है कि इनमें बुंदेली लोक जीवन अपनी सांस्कृतिक और सामाजिक विशेषताओं और लोक परंपरा के साथ जीवंत रूप में उपस्थित है। ईसुरी ने अपनी फाग रचनाओं में श्रृंगार, भक्ति, हास्य, उपदेश आदि का समावेश करते हुए बुंदेलखंड के देशज और ग्रामीण मूल्यों और परंपराओं का स्वाभाविकता और अपनेपन के साथ चित्रण किया है। ईसुरी का लोक ज्ञान और अनुभव बहुत प्रशस्त था तथा लोक संवेदना बहुत गहरी थी। उनकी रचनाओं में बुंदेली लोक जीवन की सरसता, मादकता और सरलता एक साथ झलकती है। उल्लेखनीय है कि ईसुरी की अनेक रचनाएँ रजऊ नामक काल्पनिक प्रेमिका को संबोधित हैं जो एक तरफ लौकिक श्रृंगार से युक्त हैं, तो दूसरी ओर भक्ति और अध्यात्म के क्षितिज का भी स्पर्श करती प्रतीत होती हैं। राधा-कृष्ण का प्रेम ईसुरी के प्रेम का आदर्श है। उन्होंने अपनी प्रेमिका के साथ अपना संबंध राधा-माधव जैसा माना है -

नइयाँ रजऊ काऊ के घर में, बिरथा कोई न भरमें।
सबमें है, सबसें है न्यारी, सब ठौरन में भरमें।
कौ कय अलख-खलक की बातें, लखी न जाय नजर में।
ईसुर गिरधर रँय राधे में, राधे रँय गिरधर में।

7. ईसुरी के फाग : विषयवस्तुपरक वर्गीकरण

बुंदेलखंड में ईसुरी के जो फाग प्राप्त होते हैं, वे विषयवस्तु की दृष्टि से अनेक प्रकार के हैं। जैसे, (1) रामकथा के विविध प्रसंगों पर आधारित फाग, (2) ब्रज में राधा-कृष्ण की होली संबंधी फाग, (3) ऋतु वर्णन संबंधी फाग, (4) नायिका के सौंदर्य वर्णन संबंधी फाग, (5) प्रेम और विरह संबंधी फाग, (6) कलियुग से सावधान करने वाले फाग, (7) वैराग्य और भक्ति संबंधी फाग।

अब इनमें से कुछ फागों की चर्चा की जाएगी।

7.1 ईसुरी के फागों में रामायण प्रसंग

सबसे पहले रामकथा संबंधी प्रसंग पर आधारित एक फाग देखिए -

तुम ने मोरी कयी न मानी, सीता ल्याए बिरानी।
जिनकी जनकसुता रानी हैं, वे हर अंतर ध्यानी।
हेम-कँगूर धूर में मिल जैं, लंका की रजधानी।
लै कै मिली सिकाउत जेऊ, मंदोदरी सयानी।
'ईसुर' आप हात हरिआनी, आनी मौत निसानी।

इस फाग में रामायण का मंदोदरी-रावण संवाद प्रसंग निहित है। मंदोदरी रावण के समक्ष शिकायत कर रही है कि तुमने मेरी बात न मानकर पर-स्त्री अर्थात सीता का हरण किया जिनके पति स्वयं परमात्मास्वरूप हैं। तुम्हारे इस अनैतिक कार्य के कारण अब राजधानी लंका के स्वर्णशिखर धूलि धूसरित हो जाएँगे। ईसुरी कहते हैं कि रावण अपने हाथों सीता के रूप में अपनी सुनिश्चित मृत्यु को ही उठाकर लाया था।

एक अन्य फाग में मेघनाद की शक्ति द्वारा लक्ष्मण के मूर्छित होने और हनुमान के संजीवनी बूटी लेकर आने में विलंब होने पर राम के विलाप का वर्णन है -

जो कउँ बीत जामनी जै है, का कोउ मो सें कै है।
मरे धरे लछमन हम देखे, जिअत राम ना रै है।
सुनतन बिपत अबध में पर है, जनक सुता तज दै है।
फिर पाछे कैं मूर-सजीवन, लयें जात को खै है।
'ईसुर' हनूमान दै हूँके- 'थोरी रात अबै है'।

इस करुण प्रसंग में राम कह रहे हैं कि यदि रात बीत गई तो लोग मुझे क्या कहेंगे। अगर लक्ष्मण की मृत्यु हो गई तो मैं भी जीवित नहीं रहूँगा। हम दोनों की मृत्यु का समाचार सुनकर सीता भी प्राण त्याग देंगी और अयोध्या भी संकट में पड़ जाएगी। हम सबके मरने के बाद संजीवनी बूटी आएगी तो उसे कौन खाएगा। ईसुरी कहते हैं कि उसी समय हनुमान के आगमन की सूचना उनकी इस हुंकार से प्राप्त हुई कि अभी थोड़ी रात बाकी है।

7.2 राधा-कृष्ण की होली

कृष्ण कथा में ब्रज की होली लोककाव्य के प्राण-तत्व के समान मानी जाती है। ब्रज में राधा-कृष्ण होली का आनंद सात लोक से न्यारा होता है, ईसुरी एक फाग में कहते हैं -

ब्रज में खेले फाग कनाई, राधे संग सुहाई।
चलत अबीर रंग-केसर कौ, नभ अरुनाई छाई।
लाल-लाल ब्रज लाल-लाल बन, बीथन कीच मचाई।
'ईसुर' नर-नारिन के मन में, अति आनँद सरसाई।

कृष्ण ब्रज में राधारानी के साथ फाग खेल रहे हैं। केसर और गुलाल के रंग उड़ने से आकाश में लालिमा छा गई है। पूरा ब्रज लाल रंग से रंग गया है। हरे वन भी लाल-लाल दिख रहे हैं और गलियों में रंग का कीचड़ भर गया है। कृष्ण ब्रज के प्रिय लाल है। संपूर्ण ब्रज मंडल के लाल रंग में रंगने का एक अर्थ सबका कृष्णमय हो जाना भी है। इस प्रकार फाग के बहाने कृष्ण के साथ एकरंग हो जाने से ब्रज के सब नर-नारी आनंदमग्न हो रहे हैं।

राधा-कृष्ण की होली का एक पक्ष राधा द्वारा कृष्ण को छकाने के लिए पूरी तैयारी करने से संबंधित है। इसके लिए वे गोपियों के साथ मिलकर फौजी तैयारी करती हैं -

राधे सजी सखिन की पलटन, आप बनी लफटंटन।

ललिता सूबेदार सलामी, देन लगी फर जंटन।
पथरकला सन सैन सँवारी, वर्दी पैरी बन ठन।
राइट-लेपट, मिचन नैनन की, खोलन खोल फिरंटन।
'ईसुर' कृष्णचंद मन-व्याकुल, बनौ रहौ है घंटन।

बुंदेलखंडी लोक जीवन की सहज मस्ती और हास्यप्रियता इस फाग में झलकती है। होली के अवसर पर कृष्ण को छकाने के लिए राधिका जी ने सखियों की पलटन बनाई है और स्वयं उनकी लेफ्टिनेंट बनी हुई है। ललिता जी इस फौज की सूबेदार हैं और मुस्तैदी से सलामी दे रही है। उन्होंने अपनी सेना को भली प्रकार प्रशिक्षित किया है और वर्दी पहकर खूब बनी ठनी है। फौज की भांति मार्च करते हुए दायें-बायें आँखों ही आँखों में संकेत करते हुए वे कृष्ण को रंगने के लिए मोर्चाबंदी करके तैयार है। दूसरी ओर कृष्ण भी होली खेलने के लिए व्याकुल मन से लंबे समय से तैयारी कर रहे हैं। यहाँ लोक कवि ने ब्रजबालाओं की फौज का वर्णन करने के लिए अंग्रेजी के शब्दों के जिस प्रकार विकृत अथवा लोकीकृत रूपों (पलटन, लफटंटन, फर जंटन, राइट-लेपट, फिरंटन) का प्रयोग किया है वह हँसी से लोट-पोट करने वाला है।

7.3 ईसुरी के फागों में वसंत और वर्षा

लोककवि ईसुरी के फागों में ऋतु संबंधी रचनाएँ हिंदी कवियों के परंपरायुक्त षड्ऋतु वर्णन की तुलना में अधिक जीवंत बन पड़ी हैं। वसंत ऋतु के सौंदर्य और नायिका पर उसके प्रभाव को दर्शाने वाला एक फाग इस प्रकार है -

अब दिन आए बसंती नीरे, ललित और रँग भीरे।
टेसू और कदम फूले हैं, कालिंदी के तीरे।
बसते रात नदी-नद तट पै, मजे में पंडा-धीरे।
'ईसुर' कात नार-बिरहिन पै, पिउ पिउ रटत पपीरे।

यह फाग वसंत ऋतु के आगमन के संबंध में है। वसंतागम की वेला में प्रकृति रंग बदल रही है। यमुना के तट पर टेसू और कदंब फूल उठे हैं। शीत ऋतु के बीत जाने से लोग आनंदपूर्वक रात्रि में भी नदी तट पर विहार करते हैं। लेकिन अपने प्रिय से बिछुड़ी हुई विरहिणी नायिका और पपीहा पक्षी रात भर प्रिय को पुकारते हैं।

इसी प्रकार वर्षा ऋतु भी इस लोककवि के फागों में विलक्षण रूप तथा प्रभाव के साथ उपस्थित है -

हम पै बैरिन बरसा आई, हमें बचा लेउ माई।
चड़कें अटा, घटा ना देखें, पटा देउ अँगनाई।
बारादरी दौरियन में हो, पवन न जावै पाई।
जे द्रुम कटा, छटा फुलबगियाँ, हटा देउ हरियाई।
पिय जस गाय सुनाओ न 'ईसुर' जो जिय चाओ भलाई।

वर्षा ऋतु में विरहिणी नायिका की पीड़ा को इस फाग में विरहिणी के शब्दों में वर्णित किया गया है। विरहिणी नायिका सखियों से अनुरोध करती है कि किसी भी प्रकार उसे बैरन वर्षा से बचा लें। वह अन्य युवतियों की भांति

अटारी पर चढ़कर बादलों को नहीं देखना चाहती क्योंकि उसका प्रिय उसके साथ नहीं है। वह इतनी रुष्ट है कि वृक्षों, फुलवारियों और हरियाली से चिढ़ रही है क्योंकि ये सब उसकी विरह वेदना को बढ़ाते हैं। वर्षा ऋतु के मादक सौंदर्य का वर्णन करने वाले फाग गाकर युवतियों के मन में प्रिय मिलन की आकांक्षा जगाने वाले ईसुरी को भी वह सावधान करती है कि यदि अपना भला चाहते हो तो वर्षा के ऋतु के स्थान पर मेरे प्रिय का यश सुनाओ।

7.4 ईसुरी के फागों में नायिका की चितवन

यह बताया जा चुका है कि ईसुरी ने अपनी प्रेमिका रजऊ को लक्षित करके अनेक श्रृंगारिक फागों की रचना की थी। ऐसे फागों में नायिका के नेत्रों का वर्णन विशेष आकर्षित करने वाला है। एक फाग में ईसुरी कहते हैं -

ऐसे अलबेली के नैना, मुख सें कात बने ना।
सामें परै सोउ छिद जैहै, अगल-बगल बरकै ना।
लागत चोट निसानें ऊपर, पंछी उड़त बचै ना।
जियरा लेत पराए 'ईसुरी', जे निर्दइ कसकें ना।

इस फाग में नायिका के नेत्र और चितवन के मादक और मारक प्रभाव का वर्णन है। अलबेली नायिका के नेत्रों का सौंदर्य अवर्णनीय है। इन नेत्रों की दृष्टि मर्म को छेदने वाली है और इनका निशाना इतना अचूक है कि उड़ता पक्षी भी बच नहीं पाता। अर्थात चंचल नायक अपनी चपलता छोड़कर इन नेत्रों से बिंध जाता है। ये नेत्र इतने निर्दयी हैं कि जिस पर प्रहार करते हैं उसके प्राण ले लेते हैं।

एक दूसरे फाग में ईसुरी अपनी प्रेमिका के नेत्रों को घूँघट से बाहर नहीं आने देना चाहते -

बाँकौ रजऊ तुमायी आँखें, रऔ घूँगट में ढाँके।
हम ने अबै दूर से देखीं, कमल-फूल सी पाँखें।
जिन खाँ चोट लगत नैनन की, डरे हजारन काँखें।
जैसी राखें रईं 'ईसुरी', ऊसई रइऔ राखें।

इस फाग में ईसुरी ने अपनी कल्पनाओं की प्रेयसी रजऊ की दृष्टि-माधुरी का वर्णन किया है। हे रजऊ! अपनी बाँकी आँखों को घूँघट से ढक कर रखो। दूर से देखने पर ये कमल के फूल की पंखुड़ियों जैसी लगती हैं लेकिन जिन्हें इनकी चोट पड़ती हैं वे इनके मादक प्रभाव से भयभीत होते हैं। जिस प्रकार इन्हें ढँक कर रखती रही हो वैसे ही रखती रहो; अन्यथा तुम्हारी चितवन से घायल होकर हजारों युवक मर जाएँगे।

8. निष्कर्ष

इस चर्चा के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि -

- लोकजीवन के कुछ ऐसे प्रहरी होते हैं जो अपने प्रयासों से लोक के लोकत्व को रक्षित भी करते हैं और विकसित भी।
- ऐसे लोक प्रहरियों की रचनाओं को समग्र लोक अपनी ही रचना संपदा के रूप में मानने लगता है।
- ईसुरी बुंदेली लोक-समाज के अद्भुत प्रहरी थे जिन्होंने फाग-काव्य के माध्यम से अपनी लोकजीवी भूमिका का निर्वहन किया।

- ईसुरी के फाग लोकमानस, सामाजिक जीवन, लोकोत्सव और लोक आकांक्षाओं की सहज अभिव्यक्ति करने वाले हैं।

epathshala पाठशाला
A Gateway to All Post Graduate Courses